श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं, शतेन्द्रं सु पूजैं भजैं नाय शीशं।।
मुनीन्द्रं गणेन्द्रं नमों जोड़ि हाथं, नमो देव-देवं सदा पार्श्वनाथं।।१।।

गजेन्द्रं मृगेन्द्रं गह्यों तू छुड़ावै, महा आगतें नागतै तू बचावै।।
महावीरतैं युद्ध में तू जिताये, महा रोगतैं बंधतैं तू छुड़ावै।।२।।

दुखी दुःख हर्ता सुखी सुक्खकर्त्ता, सदा सेवकों को महानन्द भर्त्ता।।
हरे यक्ष राक्षस भूतं पिशाचं, विषं डाकिनी विघ्न के भय अवाचं।।३।।

दरिद्रीन को द्रव्य के दान दीने, अपुत्रीन को तू भले पुत्र कीने।।
महासंकटों से निकारै विधाता, सवै सम्पदा सर्व को देहि दाता।।४।।

महाचोर को वज्र को भय निवारे, महापौन के पुंजतै तू उबारै।।
महाक्रोध की अग्नि को मेध-धारा, महालोभ-शैलेश को वज्र धारा।।५।।

महा-मोह अंधेर को ज्ञान भानुं, महा-कर्म कांतार को दो प्रधानं।।
किये नाग नागिन अधोलोक स्वामी, हर्‌यो मान तू दैत्य को हो अकामी।।६।।

तू ही कल्प वृक्षं तू ही कामधेनुं, तू ही दिव्य चिंतामणी नाग एनं।।
पशु नर्क के दुःखतै तू छुड़ावै, महा स्वर्ग तै मुक्ति में तू बसावै।।७।।

करे लोह को हेम पाषाण नामी, रटै नाम सो क्यों न हो मोक्षगाामी।।
करै सेव ताकी करे देव सेवा, सुनें वैन सोही लहै ज्ञान मेवा।।८।।

जपै जाप ताको नहीं पाप लागै, धरे ध्यान ताके सबै दोष भागै।।
बिना तोहि जाने धरे भव धनेरे, तुम्हारी कृपा तैं सरै काज मेरे।।९।।

गणधर इन्द्र न कर सकें, तुम विनती भगवान।
'द्यानत' प्रीति निहार कैं, कीजे आप समान।।१०।।